आर.एन.आई.नं. RAJBIL/2010/52404

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

सेवा सौभाग्य

पू. कैलाश जी 'मानव'

मूल्य » 5 वर्ष » 13 अंक » 162 मुद्रण तारीख » 1 जून 2025 कुल पृष्ठ » 28

हर हाल में जीतूंगा जिन्दगी की जंग

Narayan Children Academy
A Unit of Narayan Seva Sansthan

शिक्षा से वंचित आदिवासी क्षेत्र के बच्चों को शिक्षित करने में करें मदद

एक बच्चे का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
दो बच्चों का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	22,000/-
तीन बच्चों का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	33,000/-

Donate Now

संस्थान को **paytm** एवं **UPI** के माध्यम से दान देने हेतु इस **QR Code** को स्केन करें अथवा अपने पेमेंट एप में **UPI Address** डालकर आसानी से सेवा भेजें।

UPI narayanseva@sbi

सम्पर्क करें :
+91-294-6622222, 7023509999

सेवा सौभाग्य

मुद्रण तारीख » 1 जून 2025
कुल पृष्ठ » 28

मूल्य » 5 वर्ष » 13 अंक » 162

सम्पादक मंडल

मार्ग दर्शक » कैलाश चन्द अग्रवाल
सम्पादक » प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग » विष्णु शर्मा हितैषी
भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर » विरेन्द्र सिंह राठौड़

सम्पर्क (कार्यालय)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva
Sewa Parmo Dharm
MAKE GIVING YOUR HABIT

483, 'सेवाधाम' सेवा नगर,
हिरण मगरी, सेक्टर-4,
उदयपुर (राज.) 313002, भारत
फोन नं. +91-294-6622222,
वाट्सऐप: +91-7023509999
Web » www.spdtrust.org
E-mail » info@spdtrust.org

Seva Soubhagya Print Date 1 June, 2025 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404 Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur - 313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages- 28 (No. of copies printed 1,50,000) cost- Rs.5/-

CONTENTS

इस माह में

सम्मानित पाठक बन्धुओं के लिए

तन-मन को निरोग बनाए योग — 06

संजीव ने पाया हौसला — 09

जीएंगे अब आत्मनिर्भर जिन्दगी — 10

2700 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग — 12

सेवा प्रकल्पों से प्रभावित-कलेक्टर — 17

प्रभु से मांगे सेवा के अवसर — 18

"शांति की खोज"

सेवक प्रशांत भैया

हताश नहीं होना चाहिए। यह नहीं सोचना है कि अब सब खत्म हो गया, बल्कि यह समझ कर चलना है कि रात के बाद ही सुबह होती है और रात कितनी भी लम्बी क्यों न हो, वह स्थाई नहीं होगी। हमें विवेक से अपना कर्तव्य पूर्ण करना है, परिणाम भी अच्छा होगा।

जब मन में हताशा आए, उस समय अपने को स्थिर रखें। हताशा से प्रभावित होने का मतलब है, नकारात्मकता हावी हो रही है। ऐसे में हमें सकारात्मक सोचना है। मन को चंचल कहा गया है, हर वक्त कोई न कोई शिकायत उसकी रहती ही है। शिकायत कभी भी सकारात्मक नहीं होती। वह हमें चिड़चिड़ा और निराश करती है। ऐसे में सकारात्मक मानसिकता विकसित करने का एक शक्तिशाली तरीका है, 'कृतज्ञता' यानी जीवन में हर चीज के लिए आभार प्रकट करना। शिकायत की बजाय स्थिति-परिस्थिति को बदलने के लिए उत्साह और प्रसन्न्ता पूर्वक प्रयास आरंभ करें। हम यह क्यों देखें या सोचें कि दूसरों की तुलना में हम पीछे हैं? सोचना और समझना यह है कि हम दूसरों की तुलना में कितने बेहतर हैं। अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं। मन की आदत बिगड़ी हुई है। यह जब-तब राजस और तामस भावों -पदार्थों का चिंतन करने लगता है। अतः इसकी हर समय संभाल जरूरी है। यदि ऐसा कर पाने में असमर्थ रहे तो अपनी शांति भी खो देंगे। हमारे भीतर प्रसन्नता, शांति, उत्साह और धैर्य हरदम बनें रहना चाहिए। ये तभी संभव है जब थकावट, उकताहट, हर्ष- शोक, राग-द्वेषादि विकार न हों। हिमालय की तराई में एक शांत और निर्जन आश्रम था, जहां ऋषि वसु नामक एक महात्मा प्राचीन काल में तपस्यारत थे। एक दिन पड़ौस के एक राज्य का राजकुमार जीवन की व्यग्रता से थकाहारा उनके पास आया। विनयपूर्वक प्रणाम कर बोला- 'गुरूदेव, मेरा मन व्याकुल रहता है। न निद्रा मिलती है, न शांति। कृपया मार्गदर्शन प्रदान करें।' ऋषि वसु मुस्कुराए और राज कुमार को जल से भरा पात्र देते हुए बोले- इसे लेकर समीप के उस सरोवर तक जाओ और उसमें यह जल समर्पित कर दो, फिर मौन होकर कुछ देर वहीं बैठो।' राजकुमार ने वैसा ही किया। जल उड़ेलते समय सरोवर के पानी में कुछ हलचल हुई, पर धीरे-धीरे वह फिर से शांत हो गया। कुछ समय बाद महात्मा वसु वहां पहुंचे और बोले, राजकुमार क्या देखा? राजकुमार बोला- गुरूदेव, जैसे ही जल डाला, लहरें उठी पर कुछ ही देर में शांत भी हो गई। वसु ने कहा- यही तुम्हारे मन की स्थिति है। जब तक व्यग्रता, लोभ, क्रोध और मोह का जल मन में उडेलते रहोगे, वह अशांत रहेगा। किन्तु यदि तुम उसे बिना किसी हस्तक्षेप के समभाव से देखने का अभ्यास करोगे तो वह अपने आप शांत और स्थिर हो जाएगा। उसमें चंचलता नहीं दिखेगी। उसमें उलझो मत। राजकुमार ने मन को शांत और स्थिर रखने का 'गुर जान' लिया। उसकी व्यग्रता-आकुलता समाप्त हो गई। मित्रों ! शांति कोई बाहरी वस्तु नहीं है, वह हमारे भीतर ही है। जरूरत सिर्फ मन को साधने की है।

परोपकार परम धर्म

पूज्य श्री कैलाश 'मानव'

मनुष्य के चरित्र की परीक्षा उसके परोपकारी कार्यों के आधार पर होती है, न कि व्यक्तिगत वैभव-अर्जन पर। जो मनुष्य दूसरों के दु:ख दूर करने में जितना प्रयत्नशील होता है, वह उतना ही सभ्य, सुसंस्कृत एवं उच्च विचार वाला माना जाता है।

मानव जीवन की सार्थकता परहित के लिए सर्वस्व त्याग की भावना में निहित है। यही मानव का परम धर्म भी है। मानवता के इस उच्चतम आदर्श को जीवन में चरितार्थ करने के लिए प्रत्येक क्षण तत्पर रहना चाहिए। इस कर्तव्य पालन में प्रायः लोग दो बाधाएं गिनाया करते हैं - 'हमारी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। हम दीन -दु:खियों की सेवा तो करना चाहते हैं, लेकिन धनाभाव में यह हो भी तो कैसे ?' या 'हमारे पास समय ही नहीं बचता कि हम लोकसेवा के पथ पर चल सकें।' बंधुओं! जिनके पास धन है, वे तो आगे आएं ही लेकिन जो धन और समय के अभाव की बात करते हैं, वह उचित नहीं है। सेवा बिना धन के भी संभव है। ऐसे अनेक दु:खी हैं, जिन्हें प्रेम और सद्भाव की जरूरत है।

श्री रामकृष्ण परमहंसदेव के अनन्य भक्त - शिष्य डॉ. दुर्गाचरण नाग का सेवा-भाव तो अद्भुत ही था। वे अपने क्षेत्र में नाग महाशय के नाम से पुकारे जाते थे। परिवार गरीब था। पिता की साधारण सी नौकरी थी और स्वयं होमियोपैथिक दवा देने का काम करते थे। इनसे दवा लेने आने वाले भी प्रायः गरीब ही होते थे। नाग महाशय खुद गरीब होने के बावजूद कभी-कभार अत्यन्त गरीब रोगी को पैसे से भी मदद कर देते थे। एक बार एक कष्टसाध्य रोगी महिला को इन्होंने अपने द्वारा दी गई दवा से स्वस्थ कर दिया। महिला धनी परिवार की थी। उन्होंने नाग महाशय को कुछ धन देना चाहा पर उन्होंने केवल बीस रूपए लेते हुए शेष धन लौटा दिया। पिता यह देख रहे थे। महिला के लौट जाने पर नाग महाशय ने पिता से कहा -पिताजी। चौदह रूपए मेरी सात दिन की फीस और 6 रूपए औषधि का मूल्य । ये बीस रूपए ही मेरे हक के हैं। हक से अधिक लेना तो पाप है न ?' पिता ने उनके सिर पर हाथ रखते हुए स्वीकृति में सिर हिलाया। जो लोग परोपकार करते हैं। ईश्वर स्वयं उनकी सार-संभाल करते हैं। एक दिन पति-पत्नी दोनों घर के छोटे से बगीचे में टहल रहे थे, तभी पत्नी को एक काला सर्प दिखाई दिखा। उन्होंने नाग महाशय को सांप दिखाते हुए कहा 'जाइये घर के भीतर से लाठी ले आइये।' नाग महाशय ने पत्नी को शांत करते हुए कहा- 'सांप कहाँ किसी को हानि पहुंचता है। यह तो मन का सर्प है, जो मनुष्य को डस लेता है।' इसके बाद वे सर्प के सम्मुख हाथ जोड़ कर बोले- 'देव । आपको देख कर लोग डर रहे हैं। कृपया आप यहां से अपने गन्तव्य की ओर पधार जाएं।' सचमुच वह सर्प नाग महाशय के पीछे-पीछे बगीचे से बाहर निकला और जंगल में निकल गया। कहने का अभिप्राय यह है कि परोपकार से उपकृत व्यक्ति को तो लाभ पहुँचता ही है, साथ ही उपकार करने वाला व्यक्ति भी आत्म सन्तोष एवं आत्म तृप्ति हासिल करता है। इस प्रकार परोपकार से मनुष्य की आध्यात्मिक क्षुधा तृप्त होती है। परोपकारी व्यक्ति के चरित्र में नाग महाशय की तरह सत्त्वगुणी तत्वों का समावेश बढ़ता जाता है। जिससे एक दिन वह उच्चतम आदर्शों का प्रतीक बन जाता है। परोपकार नैतिक और आध्यात्मिक सद्गुणों का मूल है।

तन-मन को
निरोग बनाए योग

शारीरिक स्तर पर योगाभ्यास से मनुष्य निरोग रह सकता है। योग से प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। बौद्धिक स्तर पर योगाभ्यास से मानसिक क्षमता में विकास किया जा सकता है। योग करने से मनुष्य की बुद्धि तीव्र, सूक्ष्म, पवित्र और प्रतिभाशाली बन जाती है। प्रस्तुत है अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर विशेष आलेख।

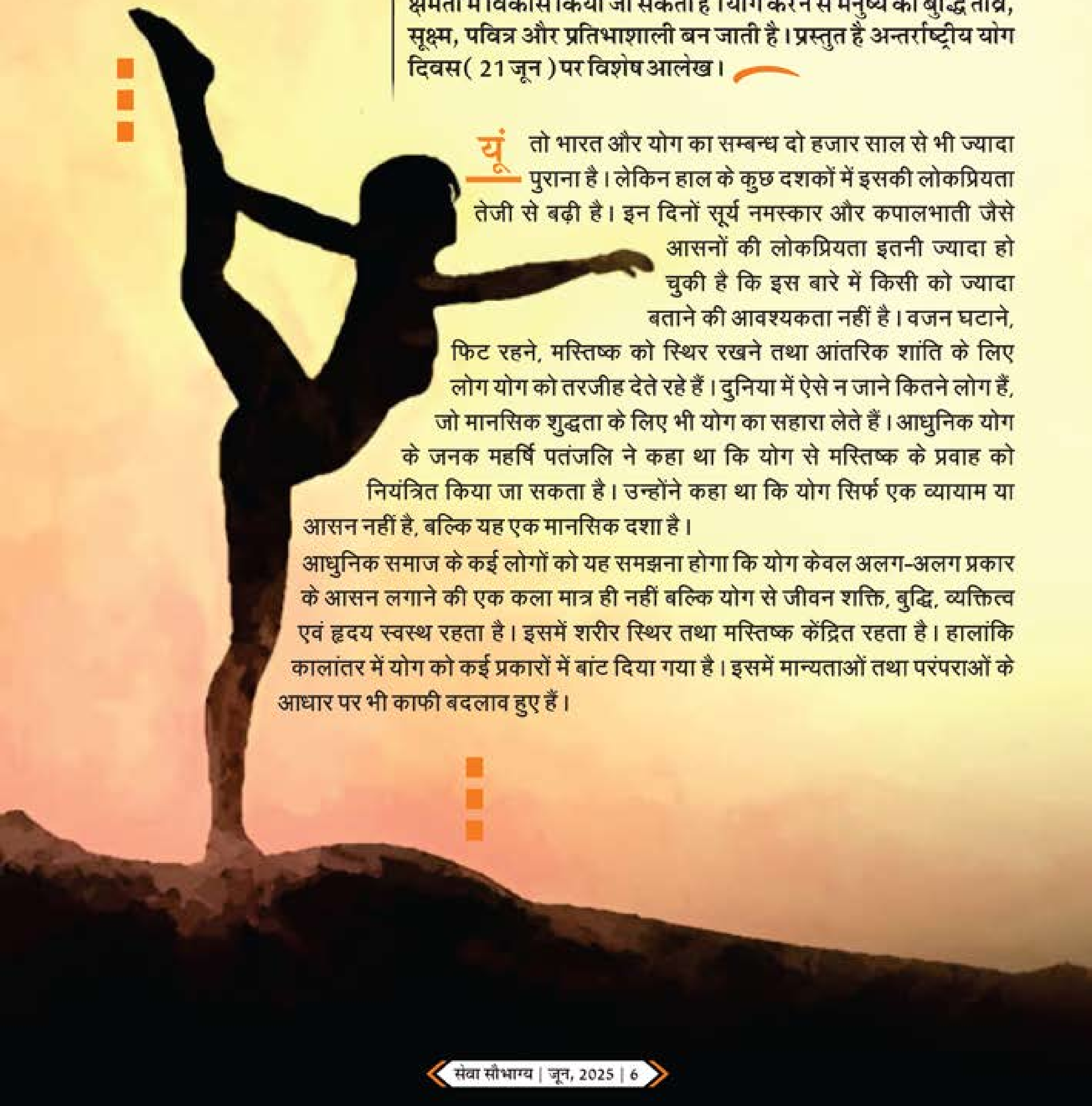

यूं तो भारत और योग का सम्बन्ध दो हजार साल से भी ज्यादा पुराना है। लेकिन हाल के कुछ दशकों में इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है। इन दिनों सूर्य नमस्कार और कपालभाती जैसे आसनों की लोकप्रियता इतनी ज्यादा हो चुकी है कि इस बारे में किसी को ज्यादा बताने की आवश्यकता नहीं है। वजन घटाने, फिट रहने, मस्तिष्क को स्थिर रखने तथा आंतरिक शांति के लिए लोग योग को तरजीह देते रहे हैं। दुनिया में ऐसे न जाने कितने लोग हैं, जो मानसिक शुद्धता के लिए भी योग का सहारा लेते हैं। आधुनिक योग के जनक महर्षि पतंजलि ने कहा था कि योग से मस्तिष्क के प्रवाह को नियंत्रित किया जा सकता है। उन्होंने कहा था कि योग सिर्फ एक व्यायाम या आसन नहीं है, बल्कि यह एक मानसिक दशा है।

आधुनिक समाज के कई लोगों को यह समझना होगा कि योग केवल अलग-अलग प्रकार के आसन लगाने की एक कला मात्र ही नहीं बल्कि योग से जीवन शक्ति, बुद्धि, व्यक्तित्व एवं ह्रदय स्वस्थ रहता है। इसमें शरीर स्थिर तथा मस्तिष्क केंद्रित रहता है। हालांकि कालांतर में योग को कई प्रकारों में बांट दिया गया है। इसमें मान्यताओं तथा परंपराओं के आधार पर भी काफी बदलाव हुए हैं।

USHA®
PISTONS PINS RINGS
ENGINE VALVES

SHRIRAM PISTONS & RINGS LTD.

SPR®
AUTO COMPONENTS
& ASSEMBLIES

दिव्यांग को एक संघर्ष, एक अनावश्यक बोझ के रूप में
व्यक्त किया जाता है जिसे हर व्यक्ति को
अपनी सोच से दूर करना चाहिए।

**दिव्यांगों का जीवन तो
बहुआयामी है-व्यक्तित्व, गर्व,
महत्वाकांक्षा, प्रेम, सहानुभूति और
बुद्धि से भरा हुआ।**

हम सदा आपके साथ हैं, कल, आज और कल।
हमारे आपके बीच कई स्मृतियां हैं-
कभी विचित्र, कभी मार्मिक, कभी भावुक।

श्रीराम पिस्टन्स एंड रिंग्स लिमिटेड परिवार
नई दिल्ली, गाजियाबाद (यू.पी.), पथरेड़ी (राजस्थान) द्वारा
सीएसआर के अंतरगत एक छोटा सा प्रयास

ट्रेन हादसे ने छीने मासूम के सपने

कृत्रिम पांव से जीतूंगा जिंदगी की जंग

ट्रेन से उतरने के दौरान पिता की गोद से गिरने पर नौ माह के मासूम का जीवन तो बच गया लेकिन दोनों पांव इस कदर चोटिल हुए की इलाज के दौरान कटवाना ही पड़ा। किलकारियों और नटखटपन के बजाय अब उसकी आगे की जिंदगी दुखों के पहाड़ जैसी थी। इस हादसे में ईंट भट्टे पर काम करने वाले पिता भी जख्मी हो गए। घर में जो कुछ था पिता-पुत्र के इलाज में खर्च हो गया।

यह दर्दनाक वाकया सीतापुर (उत्तर प्रदेश) के प्रमोद कुमार के परिवार में 12 साल पहले घटित हुआ। दो लड़कों, एक लड़की व पत्नी के साथ फैजाबाद स्टेशन पर ट्रेन से उतर रहे थे कि ट्रेन चल पड़ी और वे गोद के बच्चे सहित प्लेटफार्म पर गिर पड़े। इससे उन्हें तो चोट आई ही नौ माह के आयुष के दोनों पांव बुरी तरह जख्मी हो गए। कई दिनों के इलाज के बाद पिता तो ठीक हो गए लेकिन नन्हें आयुष को लंबे उपचार के बाद भी बचाने की खातिर दोनों पांव की बलि देनी पड़ी। डॉक्टरों ने बताया कि पांव काटने पर ही इसकी जिंदगी बच सकती है। गरीब माता-पिता पर कहर टूट पड़ा। लेकिन हौसला रखते हुए अपने व बच्चों को संभाला मेहनत-मजदूरी कर बच्चे के कृत्रिम पांव लगाने की सोच के साथ आगे बढ़े लेकिन ईंट भट्टे पर काम करने वाले इस परिवार के लिए कृत्रिम अंग लगवाने जितना रूपया जमा करना दिवास्वप्न ही था। आखिर मन मसोस कर रह गए और बच्चे का भविष्य प्रभु को समर्पित कर दिया। पिछले साल ही उन्हें नारायण सेवा संस्थान द्वारा निःशुल्क कृत्रिम अंग मिलने की सोशल मीडिया से जानकारी मिली तो उम्मीद की एक किरण दिखाई दी।

माता-पिता 12 वर्षीय आयुष को लेकर 29 मार्च 2025 को उदयपुर आए। जहां 1 अप्रैल को आयुष के दोनों कटे पांव का माप लेकर उसके लिए कृत्रिम पांव तैयार किए गए। उसे कुछ दिन यहां चलने, उठने, बैठने का प्रशिक्षण दिया गया। छठी कक्षा के इस विद्यार्थी का कहना है कि वह नारायण सेवा संस्थान के इस उपकार को मंत्र की तरह याद रखते हुए आगे बढ़ेगा और माता-पिता का सहारा बनेगा।

संजीव ने पाया हौसला

उसे क्या पता था कि जिस सुनहरे भविष्य की इबारत वह लिखने जा रहा है, विधना रास्ते में ही उसकी कलम तोड़ देगी। माता-पिता और आठ भाई-बहिनों के बड़े किन्तु साधारण परिवार के इस शिक्षित युवा ने अपने दम पर परिवार की हालत सुधारने के लिए बहुत श्रम किया। कई प्रतियोगी परीक्षाओं में भी शामिल हुआ। उस दिन इसकी बांछे खिल गई जब उसे पुलिस में भर्ती की परीक्षा का पत्र मिला। लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था।

फर्रूखाबाद निवासी संजीव (23) 3 अगस्त 2016 को ट्रेन से दिल्ली परीक्षा देने के लिए रवाना हुआ । मार्ग में स्टेशन पर कुछ लेने के लिए उतरा । कुछ क्षणों में एकाएक ट्रेन चल पड़ी। दौड़ कर चढ़ने के प्रयास में गिर पड़ा और इसके दोनों पांवों को घुटने तक पहियों ने लील लिया। उपचार के दौरान दोनों नाकाम पांव काटने पड़े। गरीब परिवार पर आसमान टूट पड़ा। करीब दो साल तक उपचार चला। पिछले साल किसी मित्र ने सोशल मीडिया पर नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिल्ली में 16 फरवरी 25 को आयोजित निःशुल्क सर्जरी के साथ कृत्रिम हाथ-पैर माप की जानकारी उसे दी। संजीव अपने माता-पिता रामादेवी - बदन सिंह के साथ शिविर में आए। उनके दोनों कृत्रिम पांव बनाने का ऑर्थोटिस्ट तकनीशियनों ने माप लिया और 4 मई 2025 को पुनः दिल्ली में फिटमेंट शिविर में विषेश नारायण कृत्रिम पांव पहनाएं। उन्हें चलने - फिरने, उठने - बैठने की ट्रैनिंग भी दी गई। अब वह बिना किसी सहारे के चलते हैं। संस्थान का आभार जताते हुए उन्होंने कहा कि न केवल जीने का हौसला मिला है बल्कि परिवार का आर्थिक संबल बनने का उसका सपना भी संस्थान ने पूरा किया है।

जीएंगे अब आत्मनिर्भर जिंदगी

संस्थान के मानव मंदिर में दिव्यांग व निर्धनजन के लिए संचालित रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण के तहत तीन माह के सिलाई प्रँक्षिण के 37वें बैच का 8 मई और मोबाइल सुधार के 50वें बैच का 10 मई को समापन हुआ। संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल ने लाभान्वित प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र एवं सिलाई और मोबाइल सुधार किट प्रदान करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उल्लेखनीय है कि इस बैच के कुछ प्रशिक्षणार्थियों ने हादसों में अपने पांव खो दिए थे। दिव्यांग प्रशिक्षुओं ने संस्थान का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अब वे स्वाभिमान के साथ आत्मनिर्भर जीवन जीने के साथ परिवार को आर्थिक सम्बल देने में योगदान भी दे सकेंगे।

संस्थान को 'बेस्ट एनजीओ ऑफ द ईयर' सम्मान

दिव्यांगजनों और वंचित वर्गों के सशक्तिकरण में समर्पित आपकी अपनी संस्था नारायण सेवा संस्थान को नई दिल्ली में 25 अप्रैल को ग्लोबल सीएसआर एवं ईएसजी अवार्ड्स द्वारा 'बेस्ट एनजीओ ऑफ द ईयर 2025' के प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हयात रेजिडेंसी में आयोजित इस भव्य समारोह में 100 से अधिक प्रमुख कॉरपोरेट संगठनों ने भाग लिया। जिनमें टाटा ग्रुप, रिलायंस फाउंडेशन, इंफोसिस फाउंडेशन, एचडीएफसी बैंक, महिंद्रा एंड महिंद्रा, और आदित्य बिरला ग्रुप जैसी प्रतिष्ठित कंपनियाँ शामिल थीं। इस आयोजन ने कॉरपोरेट सेक्टर और सामाजिक संगठनों के बीच सहयोग की भावना को नई ऊंचाई प्रदान की।

संस्थान अध्यक्ष सेवक श्री प्रशांत भैया ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने प्रेरणादायक संबोधन में कहा कि समाज के बहुआयामी निर्माण में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका और समावेशिता का बहुत महत्व है। उन्होंने कॉरपोरेट्स एवं एनजीओ के बीच प्रभावी सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया।

सम्मान ग्रहण करते हुए भैया ने कहा कि यह सम्मान संस्थान के प्रत्येक स्वयंसेवक, दानदाता और टीम सदस्य की निःस्वार्थ सेवा भावना का प्रतीक है और यह उन्हीं को समर्पित है। यह संस्थान को और अधिक सेवा और समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए प्रेरित करेगा। उन्होंने ग्लोबल सीएसआर अवार्ड्स के आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए, दिव्यांगजनों और वंचित वर्गों के जीवन में सकारात्मक बदलाव के लिए संस्थान के संकल्प को दोहराया।

'बेस्ट एनजीओ ऑफ द ईयर 2025' का यह सम्मान नारायण सेवा संस्थान की चार दशकों से अधिक समय से जारी सेवाभावना, निःशुल्क शल्य चिकित्सा, कृत्रिम अंग वितरण, कौशल विकास, शिक्षा एवं पुनर्वास प्रयासों की वैश्विक स्तर पर मान्यता है।

2700 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग

मुंबई, हैदराबाद,रायपुर बेंगलूरू व दिल्ली में शिविर

संस्थान के तत्वावधान में पिछले दिनों मुंबई, हैदराबाद रायपुर, बेंगलूरू व दिल्ली में दिव्यांगजन की जिंदगी को आसान बनाने की दृष्टि से सेवा शिविर लगाए गए। जिनमें हादसों में अपने हाथ-पैर गंवाने वालों के लिए कृत्रिम अंग-कैलिपर्स मेजरमेंट व फिटमेंट की प्रक्रिया पूर्ण की गई। जबकि पोलियो एवं क्लब फुट सर्जरी के लिए 234 दिव्यांगजन का चयन किया गया।

मुंबई – सहकार नगर के निको हॉल में 23 मार्च को संपन्न निःशुल्क ऑपरेशन, जांच, चयन और नारायण आर्टिफिशियल लिंब व कैलिपर्स माप शिविर संपन्न हुआ। जिसमें मुंबई और आसपास क्षेत्र के 500 से अधिक दिव्यांगजन शामिल हुए। जिनमें से 252 के कृत्रिम अंग व 101 के कैलिपर्स बनाने का प्रोस्थेटिक प्रकोष्ठ के टेक्नीशियनों द्वारा माप लिया गया। संस्थान के विशेषज्ञ चिकित्सक ने 80 दिव्यांगजन का सर्जरी के लिए चयन किया। शिविर का उद्घाटन प्रमुख उद्यमी श्री भरत भाई विरानी, संस्थान शाखा अध्यक्ष महेश जी अग्रवाल, समाजसेवी स्नेहलता जी अग्रवाल, प्रेम सागर जी गुप्ता, कमल जी लोढ़ा व संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर किया। अतिथियों ने 15 दिव्यांगजन को व्हीलचेयर का वितरण भी किया। संस्थान निदेशक वंदना जी एवं ट्रस्टी -निदेशक श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने अतिथियों का अभिनंदन करते हुए उन्हें संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी।

हैदराबाद - मिनर्वा-गार्डन्स में 6 अप्रैल को आयोजित शिविर में 1200 से अधिक दिव्यांगजन शामिल हुए। जिनमें से 795 के लिए कृत्रिम हाथ-पैर व 122 के कैलिपर्स बनाने का माप लिया गया। साथ ही 98 दिव्यांग का शल्य चिकित्सा के लिए चयन हुआ। शिविर में करीमनगर, आदिलाबाद, महबूब नगर, जनगांव, भूपल पल्ली, कोठागुडम, जगित्याल, जोगुलाम्बा सहित आस-पास शहरों, गांवों और क्षेत्रों से दिव्यांग आए। समारोह के मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष श्री गद्दम प्रसाद कुमार ने संस्थान द्वारा दिव्यांगों के सशक्तिकरण की दिशा में किये जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा

किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती मीनल चौबे, श्री मोतीलाल साहू विधायक रायपुर -ग्रामीण, बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा, निःशक्तजन एवं वित्त विकास निगम के अध्यक्ष श्री लोकेश कावड़िया तथा सीजीएमएससी अध्यक्ष श्री दीपक मस्के उपस्थित रहे। अतिथियों ने कहा कि इस शिविर में उन्हें नर के रूप में नारायण के दर्शन करने का अवसर प्रदान करने के लिए संस्थान साधुवाद का पात्र है संस्थान दिव्यांगों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में बहुत बड़ा काम कर रहा है। अतिथियों का स्वागत संस्थान निदेशक श्रीमती वन्दना अग्रवाल ने मेवाड़ी पाग व उपरणा पहना कर किया। उन्होंने संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। शिविर में 395 कृत्रिम नारायण लिंब व 35 कैलिपर्स बनाने का माप लिया गया। शिविर में हाथ-पांव की विकृतियों में सुधार हेतु सर्जरी के लिए 56 दिव्यांगजन का चयन भी हुआ। जनसम्पर्क अधिकारी श्री भगवान प्रसाद गौड़ ने आभार जताया, जबकि संयोजन श्री महिम जैन ने किया।

बेंगलुरू - बसवनगुड़ी स्थित मराठा हॉस्टल में 27 अप्रैल को संपन्न निःशुल्क कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर में 694 दिव्यांगजन को कृत्रिम हाथ-पैर प्रदान किए की। संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान दिव्यांग सहित समाज के कमजोर वर्ग के सशक्तिकरण के लिए पिछले 40 वर्षों से हर संभव प्रयास कर रहा है और इसके सुखद परिणाम भी सामने आए हैं। विशिष्ट अतिथि भाजपा नेत्री श्रीमती नित्या पारीक, कॉर्पोरेट श्री अरूणा रेड्डी, समाजसेवी श्री रविंद्र रेड्डी, श्री महेश अग्रवाल, श्री रिदेश जागीरदार, श्री कमलेश महाराज व श्री अभय चौधरी ने भी विचार व्यक्त किए। अतिथियों का स्वागत निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल, ट्रस्टी -निदेशक श्री देवेंद्र चौबीसा व शाखा संयोजिका श्रीमती अलका चौधरी ने पाग, उपरणा व संस्थान के प्रतीक चिन्ह प्रदान कर किया।

रायपुर - यहां जैन दादाबाड़ी में संपन्न शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा ने

गए। संसद की सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता समिति के अध्यक्ष सांसद पी.सी मोहन ने बतौर मुख्य अतिथि दीप प्रज्वलित कर सेवा शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि नारायण सेवा संस्थान दिव्यांगों के सशक्तिकरण की दिशा में केंद्र के संकल्प में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। उन्होंने संस्थान को आश्वस्त किया कि इस दिशा में यदि कोई समस्या आए तो वे उसका प्राथमिकता से समाधान करेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी सर्वश्री महेंद्र मुणोत, कुँवर राकेश देसरला, मूलसिंह राजपुरोहित, रमेश माली, सुनील वैष्णव, राकेश वैष्णव व रेलवे बोर्ड के सलाहकार सदस्य अश्विन सेमलानी मंचासीन थे। अतिथियों का स्वागत-अभिनंदन संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी, निदेशक श्रीमती वन्दना जी व सुश्री पलक जी अग्रवाल ने मेवाड़ की पाग -उपरणा व स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया। संस्थान की स्थानीय शाखा के संयोजक विनोद जैन ने संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। इस मौके पर कृत्रिम अंग पहने दिव्यांगों ने मंच पर परेड भी की। संयोजन श्री महिम जैन ने किया।

दिल्ली – नारायण लिम्ब एवं कैलिपर्स फिटमेंट शिविर 4 मई को नई दिल्ली के रोहिणी में हुआ। इसमें 350 से ज्यादा दिव्यांगों को अपर-लोवर व मल्टीपल कृत्रिम अंग और केलिपर्स लगाए गए। मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली सरकार के समाज कल्याण मंत्री श्री रविंद्र इंद्रराज सिंह और विशिष्ट अतिथि श्रीमती उषा कांति मेहता, श्री प्रवीण कोहली, श्री राजिंदर कुमार कोहली, संस्थान संरक्षक श्री सत्यभूषण जैन तथा मुंबई शाखाध्यक्ष श्री महेश अग्रवाल थे। मुख्य अतिथि ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान दिव्यांगों को सशक्त ही नहीं कर रहा बल्कि उनके खोये हुए आत्मविश्वास और निराशा को दूर करने का काम कर रहा है। यह समाज के लिए उपयोगी कार्य है। ऐसी सोच और भावना से ही विश्व एक परिवार का सपना साकार हो सकेगा। शिविर के आरंभ में संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया व निदेशक श्रीमती वन्दना जी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत-अभिनंदन किया। इस अवसर पर एनटीपीसी जीई पावर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, श्री नीरू जी बंसल, श्री अनुराग जी गर्ग, श्रीमती अंजू जी क्वात्रा, डॉ. सिया जी गोयल, डॉ. देवेश जी गोयल, श्रीराम पिस्टन्स एंड रिंग्स लिमिटेड, श्री अनिल जी दीक्षित और नवीन जी दीक्षित और अश्विनी जी दीक्षित, श्री ओम प्रकाश जी चावला, श्री दिलावर सिंह जी, श्री लोकेश जी यादव, श्री जगबीर सिंह जी शास्त्री, श्री संतोष जी जैन, श्रीधर प्रसाद जी कांडपाल, भारत ढाल एम-एस आर्ट हाउसिंग फाइनेंस इंडिया लिमिटेड को सर्वोच्च नारायण सेवा अवार्ड प्रदान किए गए। सेवक भैया ने कहा दिव्यांगजनों को उनके घरों के पास ही मदद पहुँचाने के लिए 16 फरवरी को दिल्ली में कैंप लगाया था। जिसमें 500 से ज्यादा रोगी आये उनमें से 351 दिव्यांगों को नारायण लिंब व केलिपर्स के लिए चयनित किया। उन्हें नई जिंदगी का उपहार मिला। निदेशक वंदना अग्रवाल ने अतिथियों को धन्यवाद अर्पित किया। संयोजन श्री महिम जैन ने किया।

सेवा प्रकल्पों से प्रभावित हुए आईजी व कलेक्टर

संस्थान के हिरण मगरी सेक्टर 4 स्थित मानव मंदिर में 3 मई को दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग (हाथ-पैर) वितरण एवं शल्य चिकित्सा के नि:शुल्क शिविर का उद्घाटन हुआ। जिसमें देश के विभिन्न प्रान्तों के दिव्यांगजन एवं उनके परिजन बड़ी संख्या में मौजूद थे। शिविर में मुख्य अतिथि-पुलिस महानिरीक्षक श्री राजेश जी मीणा व जिला कलेक्टर श्री नमित जी मेहता थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री कुलदीप जी शर्मा व गिर्वा की उपखण्ड अधिकारी सोनिका कुमारी जी थी।

अतिथियों ने लाभार्थी दिव्यांगजन से बातचीत के साथ ही संस्थान में कैलिपर व कृत्रिम अंग कार्यशाला, मूकबधिर बच्चों का हस्तशिल्प, फिजियोथेरेपी केंद्र आदि का अवलोकन किया। आरम्भ में संस्थान संस्थापक पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव', अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया व निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल, सुश्री पलक जी अग्रवाल ने पगड़ी उपरना स्मृति चिन्ह भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया। आईजी मीणा व कलेक्टर मेहता ने संस्थान की नि:शुल्क एवं समर्पित सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि राज्य सरकार भी दिव्यांगजन के सशक्तिकरण की दिशा में कई योजनाओं का संचालन कर रही है। उसी दिशा में संस्थान की सेवाएं भी मील का पत्थर हैं। उन्होंने इस बात पर खुशी जाहिर की कि इस प्रकार की सेवाओं को समाज का पूर्ण समर्पण व सहयोग मिल रहा है। इस दौरान कलेक्टर ने कई लाभांवित रोगियों से आप बीती भी जानी। संस्थान के श्री विष्णु शर्मा हितैषी, श्री कुलदीप सिंह, श्री लाल सिंह, श्री मुकेश शर्मा व श्री दिलीप सिंह उपस्थित थे। संयोजन श्री महिम जैन ने किया।

प्रभु से मांगें सेवा के अवसर

संस्थान में निःशुल्क सर्जरी एवं नारायण कृत्रिम अंग (हाथ-पैर) कैलिपर्स लगवाने के लिए देश के विभिन्न राज्यों से आने वाले दिव्यांग एवं उनके परिजनों से निकट संपर्क और उनकी समस्याओं से रूबरू होकर मार्गदर्शन के लिए नियमित रूप से आयोजित कार्यक्रम 'अपनों से अपनी बात' 21-23 अप्रैल तथा 28 अप्रैल से 3 मई तक संस्थान के मानव मंदिर में आयोजित हुआ। जिसमें संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने दिव्यांगजन और उनके परिजनों से विचार साझा किए। इस कार्यक्रम का प्रसारण क्रमशः 'संस्कार' व 'आस्था' चैनल से देशभर में हुआ।

कमजोरी को ताकत में तब्दील करें (21 अप्रैल)

श्री प्रशांत भैया ने कहा कि -मनुष्य अपनी कमजोरी को यदि अपनी ताकत बना ले तो उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। कोई शारीरिक अक्षमता अथवा विकृति है तो ईश्वर ने कुछ ऐसी खूबियां भी दी हैं जिन्हें विकसित कर सफलता हासिल की जा सकती है। ऐसी अनेक दिव्यांग शख्सियतें हैं भी जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में कीर्तिमान बनाएं हैं। जरूरत इस बात की है कि जज्बे और जुनून से काम किया जाए। बचपन, युवा व वृद्धावस्था के रूप में जीवन भी तीन घंटे के प्रश्नपत्र के समान है, जिसने स्वाभिमान, आत्मविश्वास और दृढ़ इच्छा शक्ति से जीवन की गुत्थियों को हल कर लिया मानों उसने अपने जन्म को सार्थक कर लिया। विनम्रता मनुष्यता और अकड़पन मुर्दे की पहचान है। विद्या, धन और शक्ति का अभिमान न कर उसका उपयोग परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में करें।

श्रृंगार शरीर का नहीं आत्मा का (22 अप्रैल)

कार्यक्रम के दूसरे दिन भैया ने कहा कि शरीर के श्रृंगार की बजाय सद्कर्म और सद्गुणों से आत्मा को सजाएं। आत्मा नित्य है जबकि शरीर नश्वर है। अच्छे कर्म का परिणाम सदैव सुखद होता है। इसीलिए काम ऐसा करें जो दीन- दुखियों के चेहरे पर मुस्कान लाए। जीवन में धन से न कोई सुखी हुआ और न किसी को किया जा सकता है। करूणा, प्रेम और आत्मीयता से ही लोगों का दिल जीता जा सकता है। समाज और राष्ट्र तभी विकसित और खुशहाल होंगे, जब हम परिवार और रिश्तों को सहज और सुदृढ़ बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। समस्या परिवार, समाज और दुनिया में नहीं बल्कि व्यक्ति के विचारों में है। व्यक्ति की सोच पर ही यह निर्भर करता है कि उसका परिणाम किस प्रकार का होगा। व्यक्ति के साथ जो भी घटित होता है, वह उसके अपने कर्मों के अनुसार ही होता है। इसीलिए जीवन में जो भी करें वह ऐसा हो जो दुनिया से विदाई के बाद भी याद किया जाता रहे।

सेवा से अपना मनोरथ भी पूर्ण (23 अप्रैल)

कार्यक्रम में तीसरे और अंतिम दिन श्री भैया जी ने कहा कि 'व्यक्ति कर्म करने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन उसका परिणाम उसके हाथ में नहीं है। परिणाम तो परमपिता के हाथ में है। जैसा कर्म होगा, उसके अनुसार भुगतना भी होगा।' जिसने भी जन्म लिया है, उसे पूर्व जन्म के कर्म का कर्ज तो चुकाना ही है। अपने जन्म को सुधारने के लिए दीन-दुखियों की सेवा में समय देना चाहिए। बीमार को दवा, प्यासे को पानी, भूखे को भोजन, निर्वस्त्र को वस्त्र देना परम धर्म है। गरीबी और अमीरी का आकलन धन से नहीं, व्यक्ति की भावना और संवेदना से होता है। जिसके पास धन तो है लेकिन दूसरों की मदद का भाव नहीं तो वही सबसे बड़ा गरीब है। जो सेवा प्राप्त कर रहे हैं, वह ऋणी जरूर बन रहे हैं लेकिन दूसरे जन्म में कर्ज के रूप में सेवा के संस्कार भी प्राप्त करेंगे। सृष्टि का यही नियम है कि आप किसी की मदद करते हैं तो जरूरत पड़ने पर आपका मनोरथ भी स्वतः सिद्ध हो जाता है। इसलिए सेवा के किसी भी अवसर से चूकना नहीं चाहिए। प्रभु उन्हीं से प्रेम करते हैं, जो उनकी बनाई दुनिया में सेवा, सदभाव, करूणा और प्रेम से एक-दूसरे की मदद करते हैं। व्यक्ति को समय का सतत सदुपयोग करना चाहिए। कठिनाई आने पर धैर्य और साहस रखें बाकी सब ईश्वर पर छोड़ दें। वहीं से रास्ता मिलेगा। यश-अपयश,हार-जीत, जीवन-मरण मनुष्य के हाथ में नहीं हैं। हाथ में केवल कर्म करना है। यदि हम सेवा और जीवदया के मार्ग पर बढ़ेंगे तो बाल भी बांका नहीं होगा।

सेवा क्षेत्र सर्वोपरि (28 अप्रैल)

अक्षय तृतीया पर आयोजित पांच दिवसीय 'अपनों से अपनी बात' कार्यक्रम के प्रथम दिन सेवक प्रशांत भैया ने कहा कि जिनके पास सब कुछ है, उन्हें दिव्यांगजन की पीड़ा एकाएक समझ में नहीं आएगी, लेकिन जब वे नजदीक से देखेंगे तो ह्रदय रो पड़ेगा। परिवार का कोई एक सदस्य भी विकलांग है तो पूरा परिवार ही थम जाता हैं और जब समाज उसका सम्बल बन जाता है तो परिवार का जीवन चक्र फिर गति पकड़ लेता है। उन्होंने कहा कि हम जाति, वर्ग, परिवार से अलग हो सकते हैं लेकिन हममें जो

मानवता का रिश्ता है वह सच्चा और प्रगाढ़ है। यही रिश्ता हमें एक-दूसरे की मदद के लिए प्रेरित करता है। सेवा का क्षेत्र ही सर्वोपरि है। सेवा में लाभ-हानि नहीं देखी जाती। सेवा करने वाले के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं। वह शरीर छोड़ने के बाद भी अपना नाम अमिट कर जाता है। इसलिए धन भी वही सार्थक है जो गरीब, दुखियों और बीमारों की सेवा में लगाया जाए। जिसने लोक कल्याण में खर्च किया वह अमर हो गया।

दृष्टिदोष ही दुःख का कारण (29 अप्रैल)

आज मनुष्य अपने भीतर न देख कर बाह्य जगत को देख रहा है उसका यही दृष्टिदोष उसके दुःख का कारण है। जिसने अपने को जान लिया, वह सम्माननीय हो गया। भैया ने कहा कि समाज में उसी व्यक्ति का आदर होता है, जो दूसरों के लिए त्याग करता है। ईर्ष्या, राग-द्वेष, लोभ -लालच, धन और अभिमान को जिसने अपने से परे धकेल दिया, वहीं सजग व्यक्ति है और ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी ठोकर नहीं खा सकता।

प्रायः होश में रहने की बात कही जाती है, ध्यान से उठने,बैठने, चलने और रहने की नसीहत दी जाती है। आखिर ये ध्यान क्या है? जागरूक रहते हुए वर्तमान में जीना ही ध्यान है। लेकिन हम देख रहे हैं कि जीवन में 'ध्यान' गौण हो गया है, जिसके परिणाम स्वरूप नाना प्रकार के दुःख, दुर्घटनाएं और रोग हावी रहते हैं। योग और ध्यान के साथ दिनचर्या शुरू की जाए तो कोई रोग, दुःख निकट आ ही नहीं सकता।

कभी-कभी व्यक्ति अपनी वाणी के कारण भी संकट में आ जाता है। वाणी पर संयम आवश्यक है। व्यक्ति को अपने मन को नियंत्रण में रखने के लिए भी 'ध्यान' करना चाहिए। अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए। क्योंकि कर्म जन्म -जन्मान्तरों तक व्यक्ति का पीछा नहीं छोड़ते।

कृतज्ञता भाव ही खुशी (30 अप्रैल)

मनुष्य को अपनी कमाई का दसवां अंश जन सेवा के लिए अवश्य खर्च करना चाहिए। क्योंकि जो समर्पित करेंगे वह किसी न किसी रूप में द्विगुणित होकर वापिस आपको मिलने वाला है। यह पुण्य के रूप में जीवन को सार्थक कर देगा। लोभ लालच करके पाप के भागी न बनें।

भैया ने कहा कि मन बड़ा चंचल है, यह हम से कोई न कोई शिकायत कर दुविधा में डालता रहता है। इसलिए सकारात्मक सोच से उसे नियंत्रित करें। शिकायत हमेशा नकारात्मक विचार से आती हैं। वह हमेशा निराश करती है। ऐसे में सकारात्मक मानसिकता को विकसित करने का एक शक्तिशाली तरीका है 'कृतज्ञता'। यानी जीवन में हर चीज के लिए आभार प्रकट करना। जीवन में कैसी भी

विषमता आए पर अपने कर्तव्य पथ को नहीं छोड़े। यहीं हमें खुश रखेगा। इस संबंध में उन्होंने ऋषि मुनियों और महापुरूषों के कई प्रेरणादायी प्रसंग भी सुनाए।

नैतिक जीवन ही सार्थक (1 मई)

दूसरे का दुःख जब अपना प्रतीत होने लगता है तो उसे दूर करने के लिए व्यक्ति सचेष्ठ हुए बिना रह नहीं' सकता' भैया ने कहा कि जीवन वही सार्थक है, जो सेवा, सत्य और नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण है। छोटे-छोटे लाभ के लिए आदमी सत्य से समझौता करने के लिए सहज आगे बढ़ जाता है, यहीं से मनुष्यता का पतन शुरू हो जाता है। इस सम्बन्ध में उन्होंने भगवान बुद्ध, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरूषों के प्रेरणास्पद जीवन प्रसंग सुनाए। जिन्होंने कठिनतम परिस्थितियों में भी नैतिक मूल्यों को नहीं छोड़ा और कर्तव्य तथा संकल्प पथ पर आगे बढ़ते रहे।

क्रोध पर नियन्त्रण (2 मई)

'अपनों से अपनी बात' के पांचवें और अंतिम दिन भैया ने कहा कि समाज में परिवर्तन के लिए बहुत कुछ सहना और त्यागना पड़ता है। दूसरों के दुःख-दर्द में उनसे सहानुभूति रखें, यथा सम्भव उचित मार्ग दर्शन दें, भूले-भटकों को सन्मार्ग पर चलाने का प्रयत्न करें। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी क्रोध पर नियंत्रण रखें। सत्य और क्षमा के आगे तलवार की धार भी कुंठित हो जाती है। उन्होंने दिव्यांगजन, असहाय, निराश्रित एवं वंचित वर्ग के भाई-बहिनों के लिए संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी देते हुए कहा कि इनके लिए संस्थान के द्वार हर समय खुले हैं।

पहलगाम हमला : संस्थान ने की श्रद्धांजलि

संस्थान में 25 अप्रैल को आयोजित श्रद्धांजलि सभा में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुई आतंकवादी हमले की कड़ी भर्त्सना करते हुए मारे गए 28 निर्दोष पर्यटकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संस्थापक पूज्य गुरूदेव श्री कैलाश जी 'मानव' व अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने कहा कि आतंकवाद के विरूद्ध पूरा भारत एकजुट है। पहलगाम में मानवता के विरूद्ध घटित जघन्य अपराध अक्षम्य है। साधकों ने 2 मिनट का मौन रखकर पुष्पांजलि अर्पित की।

झीनी झीनी रोशनी – 72

कैलाश जी की बात सुन सब ग्रामीण चौंक गये। उनकी पहली प्रतिक्रिया संदेह की ही थी। जान न पहचान, ये क्यूं हमें खून देंगे। कहीं हमें किसी तरह ठगने की कोशिश तो नहीं हो रही? कैलाश जी ने उनके चेहरों के भाव पढ़ लिये और उन्हें समझाया कि वे इसी तरह के सेवा के कार्य करते हैं। खून देना उनके लिए कोई नई बात नहीं है। ग्रामीणों को यह सब सुन विश्वास हो गया और वे कैलाश जी व गिरधारी जी को साथ लेकर अन्दर गये।

खून लेने वाले अस्पताल के कर्मचारी भी अनजान ग्रामीणों को इस तरह खून दिये जाने पर अचरज में थे। उन्हें भी शक हो रहा था कि कहीं ये दोनों व्यक्ति अपना खून बेच तो नहीं रहे। कैलाश जी उनकी पूछाताछी का मर्म समझ गए और उनका संदेह दूर करने के लिए अपना परिचय दिया तथा बताया कि वह टेलीफोन ऑफिस में कार्य करते हैं। तब टेलीफोन ऑफिस के किसी कर्मचारी को जानना ही एक उपलब्धि थी। कैलाश जी का परिचय जान वे प्रसन्न हो गये और दोनों का खून ले लिया। ग्रामीणों ने अपनी पगड़ियां दोनों के पांवों में रख दी, वे अपनी कृतज्ञता का अहसास कराने इससे अधिक और क्या करते। कैलाश जी ने उन्हें उठाया और गले लगाया तथा कहा कि इन्सान ही इन्सान के काम आता है।

इसी तरह सर्दी के दिनों में एक बार वह अस्पताल के मानसिक वार्ड न. 17 के बाहर से गुजर रहे थे तो एक रोगी को सड़क पर सोया पाया। आते-जाते लोग उसे भिखारी या जरूरतमन्द समझते हुए उसके पास केले, बिस्कुट, सिक्के वगैरह डाल गये थे। वह ठंड से बुरी तरह कांप रहा था, उसमें इतनी भी शक्ति नहीं थी कि वह केला या बिस्कुट उठा कर खा सके। कैलाश जी ने उसकी यह हालत देखी तो वहां रूक गए, उसे पास में ही पड़ा केला छील कर दिया तो वह खाने लगा। सर्दी कड़ाके की पड़ रही थी, कपड़े पर्याप्त नहीं थे, न ही ओढने का कुछ था। कैलाश जी घर गए और एक पुराना कोट उठा कर लाए। कोट उसे पहनाया तब जाकर उसकी ठिठुरन थोड़ी कम हुई। इस घटना से कैलाश जी सोचने पर मजबूर हो गए। जो कोट उन्होंने सर्दी से ठिठुरते व्यक्ति को पहनाया वह तो उनके घर में सालों से बेकार पड़ा था। इस तरह तो हर घर में ढेर सारे कपड़े ऐसे मिल जायेंगे जो काम में नहीं आते और बेकार पड़े रहते हैं। अगर ये तमाम कपड़े जरूरतमन्दों तक पहुँच जायें तो कितने लोगों का भला हो सकता है।

कैलाश जी के मन में एक नई योजना जन्म लेने लगी। लोगों के घरों से बेकार पड़े वस्त्रों को एकत्र कर सर्दी में ठिठुरते लोगों को पहुँचाना। कमला जी से इसका जिक्र किया तो उन्होंने भी उत्साह जताया और आस-पास के घरों से बेकार पड़े वस्त्रों को एकत्र करने की सोची। आम घरों में पुराने कपड़े देकर बर्तन लेने का चलन है।

दानवीरों का आभार

स्व.श्रीमती निर्मला देवी मनीहार
उदयपुर

श्री तुलसी राम शर्मा एवं स्व. श्रीमती बर्फी देवी
मंडी (हि.प्र.)

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मुथा,07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
09829769960 C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड, भीलवाड़ा-311001

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी,09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला,मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा, 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया,बाग अलवर

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,09828242497
5-C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड,झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज,किशनगढ़, अजमेर

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,09829960811, ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड सदर थाना गली, हजारीबाग

रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट राजीव सिनेमा रोड, बिजुलिया, रामगढ़

धनबाद
श्री गोपाल कुमार खंडिया, 9608529923, आजाद नगर भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द पाल गुप्ता
मो. 9752492233,मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,मो. 9926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी,माढ़ोताल, जिला - जबलपुर

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136, ए-3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रासिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड जिला - भोपाल

बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,08989609714, बखतगढ़, त.-बदनावर,जि.-धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला

परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम,मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला - नांदेड़

पाचोरा
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी,न.-028847991
9029643708,10-बी/बी, वाईसराय पार्क,ठाकुर विलेज कान्दीवली,मुम्बई

भायंदर
श्री कमलचंद लोढा, मो. 8080083655
ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़ बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे-401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिचरी, त. बड़सर जिला हमीरपुर - 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया
मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807,गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड, कैथल

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878,108
अनाज मण्डी, जुलाना,जींद

पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो.9991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर-14, पलवल

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद डेयरी मेन रोड करण विहार नियर मेरठ रोड
करनाल 132001

अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट-133001

नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014
165-हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा-403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,मो. 09274595349
म.नं.: बी-77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074,विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहबाई) जिला-बरेली

श्री विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449,मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरेली

हाथरस
श्री दास बृजेन्द,मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन,सादाबाद

हापुड़
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112, डिलाइट टैन्ट हाऊस,कबाड़ी बाजार,हापुड़

गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.-08791269705
बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा-244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल,मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू,मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला-कोरबा

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000,रामदेव चौक बालोद, जिला-बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास,शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई
09529920090, 07073452174
09529920088 फ्लेट नं. 5/ई सुनील कुमार डोकानिया, न्यु ओस्वाल ऑनिक्स, जैसल पार्क, भायन्दर ईस्ट थाने, 401105

पूणे
09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे-16

राजस्थान

जोधपुर
08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा
07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं.2-बी-5 तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

मध्य प्रदेश

ग्वालियर
07412060406, 41 ए, न्यू शांति नगर, त्रिवेदी नर्सिंग होम के पीछे,नई सडक, लश्कर,ग्वालियर 474001

हरियाणा

गुरूग्राम
08306004802, हाउस नं.-1936 जीए,गली नं.-10,राजीव नगर ईस्ट, माता रोड़, सी.आर.पी.एफ. केम्प चौक,गुरुग्राम -122001

हिसार
9257017593,मकान न. 2249, सेक्टर-14,हिसार 125005

(कर्नाटक)

बेंगलुरू
09341200200,नारायण सेवा संस्थान 40 (12) प्रथम फ्लोर, मॉडल हाउस कॉलोनी, अपोजिट समना पार्क, एनआर कॉलोनी, बसवानगुड़ी, बेंगलुरु-560004

बिहार

पटना
मो.: 7412060405
मकान नं.-23, किताब भवन रोड नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना-13

वेस्ट बंगाल

कोलकाता
09529920097,मकान नं.- 216, बांगुर एवेन्यू, ब्लॉक-बी, ग्राउण्ड फ्लोर, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) पिन कोड-700055

उत्तर प्रदेश

मेरठ
08306004811, 38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड,नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम,मेरठ 250002

लखनऊ
09351230395, 09351230393
फ्लेट नम्बर 202,गुरूकृपा अपार्टमेंट न्यू श्रीनगर आलमबाग लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

पंजाब

लुधियाना
07023101153
381/382, बी-17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़
07073452176, 08949621058
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर - 46-सी, चंडीगढ़-160047

असम

गुवाहाटी
09529920089,मकान नं. 07, भुवन भर्ग पथ, सीपीडब्ल्यूडी कार्यालय के सामने, चंद्रमुख सत्रिया अकादमी के पास, पोस्ट-बामुनी मैदान, कामरूप मेट्रो, गुवाहाटी (असम) 781009

गुजरात

सूरत
09529920082,
27, सम्राट टाऊनशिप,सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा
09529920081
म. नं.: 1298, बैकुंठ समाज, श्री अम्बे स्कूल के पास, वाघोड़िया रोड, वडोदरा -390019

अहमदाबाद
09529920080, 08306008208
7/ए कपील कुंज सोसायटी विजय नगर के पास, मेट्रो स्टेशन नारंगपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) 380016

दिल्ली

रोहिणी
08588835718,
08588835719, बी-4/232 शिव शक्ति मंदिर के पास,सेक्टर-8 रोहिणी, दिल्ली - 110085

जनकपुरी, नई दिल्ली
07023101156, 07023101167
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

विकासपुरी, नई दिल्ली
09257017592,मकान नं. 342 ब्लॉक-सी, मद्रासी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरैपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस
07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा
07073474438, मकान नं. 212/53, राधानगर, भारत पेट्रोलियम अधिकारी आवास बिल्डिंग,मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़
07023101169,एम.आई.जी. -48 विकास नगर, आगरा रोड़,अलीगढ़

मध्य प्रदेश

इन्दौर
09529920087,12, चन्द्रलोक कॉलोनी खजराना रोड, इंदौर-452018

छत्तीसगढ़

रायपुर
07869916950,मीरा जी राव, म.नं.-29/500 टीवी टावर रोड, गली नं.-2, फेस-2 श्रीरामनगर,पो.-शंकरनगर,रायपुर,छ.ग.

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद
07073474435
श्रीमती शीला जैन निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेंटर,बी.-350 न्यू पंचवटी कॉलोनी, गाजियाबाद -201009

लोनी
07023101163
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला, चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा
07023101174
मकान न. 8/153, ई-3, न्यू लॉयर कॉलोनी, पानी की टंकी के पीछे, आगरा (उत्तर प्रदेश)

गुजरात

राजकोट
09529920083, बी-33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिवर्सिटी रोड, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून
07023101175, साई लोक कॉलोनी, गांव कारवरी ग्रांट,शिमला बाय पास रोड, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी
08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी,दिल्ली-6

शाहदरा
बी-85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

हरियाणा

अम्बाला
07023101160,सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर-7 अम्बाला

कैथल
8696002432,7023101166, फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड़, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर
09529920089, बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिचर्स सेन्टर बी-50-51 सनराईज सिटी,मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा,जयपुर

तेलंगाना

हैदराबाद
09573938038,लीलावती भवन, 4-7-122/123 इसामिया बाजार, कोठी , संतोषी माता मंदिर के पास,हैदराबाद -500027

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव,
वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार....

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रु.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रु.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रु.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रु.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रु.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रु.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रु.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रु.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रु.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रु.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रु.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रु.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रु.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रु.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
तिपहिया साईकिल	5,000 रु.	15,000 रु.	25,000 रु.	55,000 रु.
व्हील चेयर	4,000 रु.	12,000 रु.	20,000 रु.	44,000 रु.
कैलिपर	2,000 रु.	6,000 रु.	10,000 रु.	22,000 रु.
वैशाखी	500 रु.	1,500 रु.	2,500 रु.	5,500 रु.
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रु.	30,0000 रु.	50,0000 रु.	1,10,000 रु.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7,500 रु.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22,500 रु.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37,500 रु.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000 रु.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 1,50,000 रु.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 2,25,000 रु.

शिक्षा से वंचित आदिवासी बच्चों को शिक्षित करने में करें मदद

एक बालक का 1 माह का शिक्षा सहयोग	1,100 रु.
एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000 रु.
एक बालक का आजीवन पालनहार सहयोग (6 से 18 वर्ष)	1,00,000 रु.

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe Paytm
narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

नेचुरोपैथी के साथ योगा थेरेपी एवं एडवांस एक्यूपंक्चर थेरेपी भी उपलब्ध है।

नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय

प्रकृति ही हमारी सच्ची स्वास्थ्य रक्षक है

राजस्थान का कश्मीर कही जाने वाली झीलों की नगरी उदयपुर से 15 कि.मी दूर अरावली पर्वतमाला की सुरम्य वादियों के आंचल में लियों का गुड़ा गांव स्थित नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर में नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय असाध्य रोगों से ग्रस्त उन महानुभावों को आरोग्य प्रदान कर रहा है जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों से निराश हो चुके थे तथा इन रोगों को अपनी नियती मानकर अभिशप्त जीवन जी रहे थे। ऐसे ही निराश महानुभावों को संस्थान में पधार कर स्वास्थ लाभ लेने का सादर आमंत्रण है।

भर्ती होने वाले रोगियों की दिनचर्या प्राकृतिक चिकित्सक के निर्देशानुसार निर्धारित होती है।

रोगी को उनकी स्वास्थ्य समस्याओं के अनुसार आहार चिकित्सा दी जाएगी।

आवास एवं भोजन की सुव्यवस्था।

Website : www.narayanseva.org

Seva Soubhagya Print Date 1 June, 2025 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404 Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur - 313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages- 28 (No. of copies printed 1,50,000) cost - Rs.5/-